

# जन्म दिवस पूजा

दिल्ली

मार्च 21, 1997

आप सबको अनन्त आशीर्वाद ।

जब दुनिया सोती है तब एक सहजयोगी जागता है और जब सब दुनिया जागती है तो सहजयोगी सोता है। इसका मतलब ये होता है कि जिन चीजों की तरफ सहजयोगियों का रुख है उस तरफ लोगों का रुख नहीं। उनका रुख और चीजों में है। किसी न किसी तरह से वो सत्य से विमुख हैं, माने किसी को पैसे का चक्कर, किसी को सत्ता का चक्कर, न जाने कैसे-कैसे चक्कर में इंसान घूमता रहता है और भूला-भटका, सत्य से परे, उसकी ओर उसकी नज़र नहीं है। कोई कहेगा कि इसका कारण ये है, इसका कारण ये है, कोई न कोई विश्लेषण कर सकता है! पर मैं सोचती हूँ अज्ञान, अज्ञान में मनुष्य न जाने क्या-क्या करता है। एक तरह का अंधकार, घना अंधकार छा जाता है। जैसे अभी यहां अगर अंधकार हो जाए तो ना जाने भगदड़ मच जाए, कुछ लोग उठकर भागना शुरू कर दें, कितने लोगों को गिरा दें, उनके ऊपर पांव रख दें, उन्हें चोट लग जाए। कुछ भी हो सकता है। इस अंधकार में हम लोग जब रहते हैं तब हमारी निद्रा अवस्था है। लेकिन हम जब जागृत हो गए, जब कुण्डलिनी का जागरण हो गया और जब आप सत्य के सामने खड़े हो जाते हैं तो सत्य की महिमा का वर्णन कोई नहीं कर सकता। मैंने पूछा किसी से, भई सहज में तुम्हें क्या मिला? बोले माँ ये नहीं बता सकते पर सब कुछ मिल गया। सब कुछ माने क्या? मैं भी कहूंगी कि आज के दिन मुझे सहज में सब कुछ मिल गया है। मैं जब छोटी थी तो अपने पिता से कहती थी कि मैं चाहती हूँ कि जैसे आकाश में तारे हैं ऐसे दुनिया में अनेक लोग तारे जैसे चमकें और परमात्मा का प्रकाश फैलाएं। कहने लगे, हो सकता है। तुम सामूहिक चेतना जागृत करने की व्यवस्था करो और कुछ भाषण मत दो, कुछ लिखो नहीं, नहीं तो दूसरा बाईबल तैयार हो जाएगा, कुरान तैयार हो जाएगा और एक झगड़े की चीज़ शुरू हो जाएगी। सो इससे पहले तुम सामूहिक चेतना करो और सामूहिक

चेतना का कार्य शुरू हो गया, अनायास, सहज में! लेकिन उसकी जो समस्याएं हैं वो मुझे आपसे आज बतानी हैं।

बहुत आनन्द की चीज़ है कि सामूहिक चेतना हो गई और सब जगह इतने ज़्यादा मात्रा में, हर देश में, लोग सत्य को पा गए और उसमें ही आनन्द में हैं। लेकिन कष्ट तब होता है, ये सोच करके, कि सामूहिक चेतना में हमने कोई चयन नहीं किया। दरवाज़ा खोल दिया हर तरह के लोग अन्दर आ गए और अपने साथ अपनी गन्दगी भी लेकर अन्दर चले आए। और जब ऐसे थोड़े से भी लोग आ जाते हैं तो वो बहुत नुकसान देते हैं। नामदेव वगैरह तो बिल्कुल, जो पहले बड़े साधु-सन्त हो गए, जो अपने ही लोग हैं, उन्होंने तो साफ-साफ कह दिया था जो बुरे हैं वो अच्छे हो ही नहीं सकते। उनकी आदतें ठीक हो ही नहीं सकतीं। उदाहरण के लिए उन्होंने कहा एक मक्खी लीजिए मक्खी, एक तो आपके खाने पर बैठेगी तो भी मार डालेगी और अगर कहीं मर गई और पेट में चली गई तो भी आप मर जाएंगे। ये मक्खी नहीं ठीक हो सकती। उन्होंने कहा कि ऐसे मक्खी वाले बहुत से लोग, बहुत सा उनको गुड़ चिपकाने का शौक होता है और उसकी ओर दौड़ते ही रहते हैं। सो सहज में ये चीज़ें सब हमारी गिर जानी चाहिए। जब तक ये गिरती नहीं तब तक हम ऊंचे नहीं उठ सकते। पंखों में अगर कोई चीज़ लग जाए तो पक्षी भी नहीं उड़ पाते। इसलिये जो ये आनन्द का आकाश है जिसे कि कवियों ने रागांचल कहा है। - मां के प्यार का आंचल - इसमें आप एक पक्षी की तरह उड़ नहीं सकते, क्योंकि आपके पंखों में भी कुछ न कुछ अभी लगा हुआ है।

आज का दिन शुभ दिन है और बहुत से लोग सोचते हैं कि बहुत बड़ा दिन है और इस दिन कोई विशेष कार्य हुआ, ऐसे लोगों ने कहा हुआ है। लेकिन आज के दिन एक विशेष कार्य आप लोगों को करना है। इतने सारे आपने गुब्बारे लगा रखे हैं, इससे इंसान खुश हो जाता है, देखता है कि देखो रबड़ में भी कितनी शक्ति है कि वो हमें सुख और आनन्द दे सकता है, ओर वो भी एक बड़ी सौन्दर्यपूर्ण वस्तु बन सकता है। फिर हम तो मनुष्य हैं और मनुष्य में हम आज सहजयोगी हैं, पहुंचे हुए लोग हैं। सो इन लोगों की एक स्थिति आने के लिए क्या करना चाहिए?



अभी मेरा एक अनुभव हुआ जो मैं आपको एक कथा के रूप में बताती हूँ। इससे मुझे बड़ा दुःख हुआ। मैं इसलिए ये सब हिन्दी में बोल रही हूँ क्योंकि ये ज्यादातर दोष हिन्दुस्तानियों में है। अंग्रेजों में इतना नहीं, परदेश में भी इतना नहीं। उन लोगों को इस की अक्ल भी कम है। हमारे देश में पहले ये हमारी भारत माता, पूरी सम्पूर्ण, इसमें अनेक तरह के देश समाए हुए थे। आप जानते हैं इसमें सभी था, बर्मा था, सीलोन था, पाकिस्तान, बांग्लादेश आदि अनेक देश समाए हुए थे। ये हमारी माँ है 'भारत माता'। पर इसको लोगों ने काट-पीट लिया। किसलिए काटा-पीटा? वो ऐसी बात हो जाती है कि जैसे कोई लोग इस देश में ऐसे हो गए जिन्होंने सोचा कि ये हमारे देश के लीडर हो गए, ये बड़े आदमी हो गए तो हम क्यों न कुछ ऐसा करें कि हम भी बड़े हो जाएं। ये अगर प्रधानमन्त्री हो सकते हैं तो हम भी प्रधानमन्त्री हो सकते हैं। ईर्ष्या, पहली चीज़, ईर्ष्या हो गई कि हमारा एक देश हो जाए, हम अगर विभाजन कर लें तो उतना हिस्सा हमको मिल जाएगा। उस पर हम राज-पाट करेंगे। जैसे बहुत से बड़े-बड़े परिवारों में ऐसा होता है कि लोग चाहते हैं, हमारा अलग घर हो, हम अलग से रहें, हमारे बीवी-बच्चे हों, हम वहीं रहें और किसी से मतलब न रखें। तो विभाजन करने की एक प्रवृत्ति मनुष्य में है। और उसी के कारण, समझ लीजिए आप, बांग्लादेश बना तो मैं अभिभूत हो गई कि लोगों ने इतने से बांग्लादेश को मांगा और इसलिए कि कुछ लोग चाहते थे कि हमारा राज्य हो। आप इस्लाम का नाम लो या किसी भी धर्म के नाम पर कोई न कोई बहाने से विभाजन कर डाला और आज बांग्लादेश का ये हाल है कि हमें लोग कहते हैं माँ आप मत जाओ नहीं तो आप की आंखों से अविरल अश्रु धारा बहती रहेगी। इतनी दुर्दशा है। पाकिस्तान का क्या हाल है? सीलोन जिसको कि अब श्री लंका कहते हैं उसका क्या हाल है? ये जो तोड़-तोड़कर देश के इन्होंने अलग भाग बनाए ओर सोचा कि अब इसमें हम राज करेंगे, अधिकतर उनके प्रधानमन्त्री वगैरह को वहीं के लोगों ने मार डाला। उनका खून कर डाला। सो ईर्ष्या से ईर्ष्या बढ़ती है और फिर इसी तरह के समूह बन जाते हैं और फिर लड़ते हैं कि यह तो हमें चाहिए। अभी भी अपने यहां बहुत चला हुआ है, विभाजन का विचार। जैसे हमारे यहां कहीं विदर्भ है तो कहीं झारखण्ड है। ये बनाने से क्या मिलेगा? किसको क्या मिला है विभाजन से? सहजयोग इसके बिल्कुल विरोध में है कि हम किसी चीज़ का विभाजन

करें। हमको तो सबको जोड़ना है (Synthesis)। सहजयोग सारा (समन्वय) पर चलता है और अगर आपको समन्वय की कोई कल्पना नहीं है तो आप सहजयोग छोड़ जाएं, वही अच्छा है।

अभी एक बहुत भारी वारदात हो गई कि एक साहब सहजयोग में थे वो सबके भूत निकालते थे। मैंने कहा बन्द कीजिए, ये भूत आपको पकड़ेंगे। पर उनको शौक हो गया। हो सकता है लोग उनको पैसा देते हों या बहुत बड़ा आदमी कहते हों, जो भी हो उन्होंने अपना एक अलग ग्रुप निकाल लिया। सहजयोग के भी कुछ ऐसे लोग थे वो भी अलग हो गए। एक अलग ग्रुप बनाकर उन्होंने एक अलग से संस्था निकाली। हां मेरे बारे में उनको कहते शंका नहीं थी, लेकिन और जो लोग हैं और लीडर जो हैं, किसी काम के नहीं। कुछ उसके दोष, कुछ उसके दोष, सबके दोष, सबके दोष निकाल कर उन्होंने कहा कि हम बड़े शुद्ध आचरण के लीडर हैं और हम माँ के भक्त हैं। मुझसे बिना पूछे, मुझसे इजाज़त लिए बिना, उन्होंने अपना एक बड़ा ग्रुप बना लिया। मेरे फोटो खूब दिखाते दुनिया भर को। पता नहीं क्या धन्धा करते थे, मुझे तो पता ही नहीं कि क्या हो रहा था। और लीडरों को ये लीडर अच्छा नहीं वो लीडर अच्छा नहीं। अगर कोई खराब हो तो मैं खुद जान जाऊंगी। जब मुझे मानते हैं तो मुझ पर छोड़ देना चाहिए। मुझे तय कर लेने दीजिए कि लीडर अच्छा है या नहीं। लेकिन लीडर को तुम ऐसे हो, तुमने ये क्यों किया, तुम ऐसे क्यों करते हो? इसका अधिकार आपको नहीं है। अब कोई कहेगा लीडर क्यों है सहजयोग में। इसलिए है कि मेरा सम्बन्ध सबके साथ नहीं हो सकता, अगर बीच में एक इंसान रहे तो उसके माध्यम से मैं सबसे सम्बन्धित हो सकती हूँ। तो वो लीडर पर नाराज हो गए, ये लीडर ठीक नहीं, यह ऐसा है वैसा नहीं। उसका जो दोष हो, उसकी जो तकलीफ हो, उसे मुझे निकालना चाहिए न कि आपको। अगर आपको तकलीफ है तो आप मुझे लिखो। पर आप अगर ऐसे आदमी से कहें कि अच्छा अब आपको लीडर पसन्द नहीं तो आप सहजयोग छोड़ दो, तो उसके साथ ऐसे दस अधिकारे सहजयोगी जुट जाएंगे और फिर उस लीडर के लिए ये काम करने लगेंगे। इसी तरह का एक ग्रुप बन गया। उसमें ७०-८० लोग इस तरह के इकट्ठे हो गए जिनकी मैंने कभी शक्ल नहीं देखी, जिनका कभी नाम नहीं सुना, मैं जानती नहीं कि ये सहजयोगी हैं। अब उन महाशय ने कह दिया कि मैं तो कल्कि का



अवतार हूं। चलो भई हो, मुझे कुछ नहीं कहना है। जाओ ओर तुम सहज से हटो, बस सहज में आपका कोई स्थान नहीं। इन लोगों ने आपको मान लिया कि ये कल्कि का अवतार है। उसी के ये लोग चरण छूने लगे थे, चरण छू महाराज, पैसा छू महाराज। सब तरह के महाराज होते हैं, तभी ये बने तो पैसे लिए इनसे। ये लोग जो दोष अपने लीडरों में दिखा रहे थे वही दोष उनके अन्दर थे। बहुत अच्छे से उनका प्रादुर्भाव हुआ और सब देखने लग गए कि ये क्या है? तो इस तरह की ईर्ष्या और महत्वाकांक्षा हो जाती है। लेकिन बेवकूफ जितने भी सहजयोगी थे छन कर उसमें चले गए। बड़ी कमाल की चीज़ है क्योंकि अन्तिम निर्णय (Last Judgement) है न। तो छन-छनकर ऐसे लोग इकट्ठे हो गए और लीडर का चरित्र अच्छा नहीं, तो फलाना अच्छा नहीं, तो वो पैसा खाता है, ये है वो है। सी बी आई से बढ़कर। मैंने कहा भई हट्ट हो गई। मुझसे पूछो तो, मेरा प्रमाण पत्र (Certificate) तो लो। लेकिन हम माँ आपको तो मानते हैं। लेकिन मैं जो कर रही हूँ उसको नहीं मानते। करते-करते ये बेवकूफ लोग गणपतिपुले पहुंचे। वहां इन्होंने मेरे ऊपर पत्थर फेंके। क्योंकि जब दुर्बुद्धि हो जाती है, जब बुद्धि भ्रष्ट हो जाती है तो आपको होश ही नहीं रहती कि आप बोल क्या रहे हैं। जैसे शराबी आदमी हो जाता है, उस तरह की हालत हो जाती है। और वहां पर उन्होंने हंगामा मचा दिया। प्रोग्राम में आ गए। मैंने देखा इतने खराब उनकी चैतन्य लहरियां (Vibrations), मैंने कहा बाप रे बाप ये सहजयोग में बैठने वाले हैं? अपनी चैतन्य लहरियां ठीक करने की जगह दूसरों के चैतन्य लहरियां ठीक कर रहे हैं। तो ऐसे जो लोग सहज में हैं उनको सहज छोड़ ही देना चाहिए क्योंकि सहजी वो हैं नहीं। लेकिन अगर एक-आध । माई का लाल खड़ा हो गया तो उसकी दुम पकड़कर बहुत से लोग सोचते हैं कि वो स्वर्ग में चले जाएंगे। कैसे?

सहज एक सामूहिक कार्य है, एक सामूहिक संस्था। इसमें किसी का नाक उधर, तो आंख उधर, किसी का हाथ उधर। तो ये चलने ही नहीं वाला क्योंकि चैतन्य को ये बात पसन्द नहीं है। फिर मैंने कहा कि तुम बगावत कर रहे हो तो कहने लगे आप हमें गाली दे रहे हैं। मैंने कहा नहीं मैं आपका वर्णन कर रही हूँ कि आप चैतन्य से बगावत मत करो। इसीलिए वहां भूकम्प आ गया और अब आगे क्या होगा एक माँ की दृष्टि से मैंने कहा भई देखो सत्य ओर परमात्मा जो है, वो कोई तुमको क्षमा नहीं करेंगे, मैं तो

माँ हूँ मेरी बात और है। वो तुमको नहीं छोड़ेंगे, तुम मेहरबानी करके ये धन्धे बन्द कर दो। लेकिन 'लागी नहीं छूटे' वही बात है। उसी चक्कर में वो फंसे हैं।

आजकल मैंने सुना है, देहरादून में बड़े जोरों में ये काम हो रहा है। उधर झारखण्ड चल रहा है, इधर एक भूतखण्ड भी चल रहा है। अब अगर सहजयोग से इन दो-चार बदमाशों को निकाल दिया जाए तो उनके साथ जुटने वाले भी बहुत से लोग हैं। और एक दूसरा ग्रुप बना लेंगे पर उस ग्रुप के लिए मुझे हर्ज नहीं। वे कृपया चले जाएं ओर गंगा जी में डूब जाएं, मुझे उसमें कोई हर्ज नहीं। पर वो सहज में नहीं रह सकते और मेरा नाम नहीं ले सकते, मेरा फोटो नहीं लगा सकते। आज ये बात बड़ी दुखदाई लगी, जब मैंने सुना कि जिस आदमी पर मेरा इतना विश्वास, जिसने इतना कार्य किया, उसी को कहने लगे, तुम ये मोटर कहां से ले आए? अरे भई वो काम करते हैं, धन्धा करते हैं, ये मुझे पूछना चाहिए और तुमको अगर कोई ऐसी खास शिकायत हो तो मुझे चिट्ठी लिखो। आज मुझे कहना नहीं था पर और कोई मौका नहीं था तो इस शुभ अवसर पर मुझे अशुभ बात कहनी पड़ रही है। इस तरह के अगर धन्धे करने हैं तो अभी आप सहज से अपना आसन लेकर तशरीफ बाहर ले जाएं। उसमें मुझे कोई हर्ज नहीं सहजयोग में किसी पर ज़बरदस्ती नहीं है। आप जानते हैं। मैंने तो कभी अपने घरवालों पर भी जबरदस्ती नहीं की कि तुम सहज करो। हालांकि मैं जानती हूँ कि इससे बढ़कर और कोई चीज़ नहीं है। पर मैंने उनसे भी कभी नहीं कहा कि तुम सहज करो। करना हो तो करो नहीं तो मत करो। पर ऐसे धन्धे नहीं करने। इसका मतलब है आप कभी भी सहजयोगी नहीं हो सकते। एक तरह से सहज की दृष्टि से अपने लीडर से इस तरह से बर्ताव करना महापाप है। और उसको लेकर ग्रुप बनाना तो उससे भी महापाप है। अगर आप लोग चाहें तो आप मुझे चिट्ठियां लिखें, मैं उस पर खबर करूंगी। मुझे तो चैतन्य (Vibrations) पर फौरन पता चल जाता है कि वाकई मैं आप सच हूँ कि वो और दुनिया भर की चीज़ें उसमें लिखते हैं। चिट्ठी भी आती है तो उसमें इतनी बकवास कि मैं उधर ध्यान ही नहीं देती। वो लीडर ऐसा है, वो लीडर ऐसा है। अरे आप कौन बड़े शुद्ध आत्मा हैं? आप अपने को तो देख लीजिए। देखना चाहिए कि जब आप ही नहीं ठीक हैं तो आगे का क्या होगा? आपके बच्चे हैं और बच्चों के अलावा जो आपके आस-पास पड़ोसी आदि सब लोग रहते हैं,



तो वो क्या सोचेंगे कि आपका लीडर ऐसा है? तो क्या सोचेंगे आपके लिए भी? आप क्यों पीछे लगे हो? आपकी माताजी को अक्ल नहीं कि वो ऐसे लीडरों को चुनती हैं। इसी तरह की चीजें शुरू हो जाती हैं और सहजयोग खत्म हो जाता है। अभी तक तो कहीं इस तरह से खत्म नहीं हुआ। कोशिश हमने पूरी की थी कि डूबते हुआ को बचा ही लो। किसी तरह से बच जाएं तो अच्छा ही है। जितने सहजयोगी हों, अच्छा है। मुझे ये भी लगता है कि सत्य पर बसा हुआ ये जो स्वर्ग है, स्वर्ग में जाने के लिए भी थोड़ी सी तैयारियाँ ज़रूरी हैं और नहीं तो दूसरी बात ऐसी भी है कि वहां भी जगह कुछ कम होगी। तो नियति भी ऐसा कार्य कर रही है कि चलो ये फालतू लोगों की कांट-छांट करो। लेकिन इस चक्कर में आपको आना नहीं चाहिए।

अगर आप वाकई जागृत हों तो अपने प्रति जागृत हों, दूसरों के प्रति नहीं। अपने प्रति जागृत होकर देखो कि हमारे अन्दर कौन सी कमी है। किसी को कोई चक्कर, किसी को पैसा कमाने का चक्कर है। अब सहजयोग में पैसा कमाने लोग आते हैं। अगर उनसे कहें कि भई आप यहां पैसा कमाने के लिए नहीं आए हैं तो ये बात उनकी खोपड़ी में नहीं घुसती। पैसे का चक्कर भी आज मुझे कहना पड़ेगा कि कुछ लोगों में कुछ अक्ल ही कम है। पहले ईसा ने कहा था कि 'पहला अन्तिम होगा और अन्तिम पहला' (First will be the last and last will be the first) ऐसा कोई दिखता नहीं है। जो शुरू-शुरू में हमारे यहां सहजयोगी थे, हमारे बम्बई केन्द्र में आए तो वो कहने लगे माँ कम से कम हमसे एक-एक हजार रूपए ले लो। मैंने कहा देखो बेटे मुझे न तो पैसा गिनना आता है न ही मुझे रखना आता है, न ही मैं बैंक जानती हूँ। तो अपना अगर कोई बन जाए, जिसको कहना चाहिए, ट्रस्ट या कोई चीज़, तब मैं फिर तुम लोगों से रूपये उसमें ले लूंगी। उसमें जमा करना। इसलिए नहीं कि मुझे बड़ी ईमानदार बनना चाहिए, मुझे अक्ल ही नहीं है बेईमानी की, तो फिर किया क्या जाए? मुझे अगर गिनना ही नहीं आता पैसा तो मैं क्या करूँ? मुझे तो बैंक का चेक भी लिखना नहीं आता। वो तो छोड़ो हम बने ही कुछ और तरह से हैं। पर आप लोग ये सब जानते हैं कि धर्म के नाम पर कोई अगर पैसा लेता है तो वह पचता नहीं। पैसे का चक्कर बड़ा ज़बरदस्त है। तो इस बार हमने सोचा था कि बहुत बार हमने आपसे कहा भी, कि यहां की जो औरतें रास्ते में भीख मांगती हैं, बहुत सी मुसलमान औरतों को उनके पतियों

ने छोड़ दिया है, वो रास्ते पर बच्चों को लेकर भीख मांगती हैं और कहां-कहां से बाहर से, राजस्थान से, बिहार से औरतें यहां आई हुई हैं, इनका कुछ न कुछ भला करना चाहिए। इसलिए हमने एक संस्था बनाई है। उसके लिए हमें पैसों की आपसे कोई ज़रूरत नहीं। हमने कभी किसी से भी पैसे के लिए नहीं कहा। हमारा इंतज़ाम हो जाता है। लेकिन मैंने सोचा कि आपको भी कुछ पुण्य मिले। तो मैंने कहा पांच सौ रुपये रख दो, एक सौ आठ के बजाए। हो गया, चिट्ठियों पर चिट्ठियां १०८ का ५०० कर दिया। अरे साल भर में आप को एक बार गर पैसा देना पड़े, कुछ पुण्य करने का ही नहीं क्या? सिर्फ लेने का है? फिर लक्ष्मी तत्व आपमें कैसे दिखाई देगा? लक्ष्मी तत्व में तो सिर्फ देना ही होता है। उस पांच सौ के लिए लोग इतने पगला गए। पांच सौ रुपये तो आप बाल कटाने के देते हैं नाई को। ऐसी आफत मचा दी, कि ५०० रूपए? तब फिर मैं समझ गई कि लोग अभी अधकचरे हैं। पहले जमाने में यह बात नहीं थी। श्रद्धा और त्याग, और त्याग की भावना ही नहीं आती थी, मज़ा आता था। तो ये जो बात है हमारे अन्दर, अब भी हमारा चित्त तो पैसे में हैं, हम तो १०८ ही देंगे, नहीं तो हम आएंगे ही नहीं। मत आओ, बड़ा अच्छा है। निकल ही जाओ सदा के लिए, तो अच्छा है। क्योंकि सहजयोग भिखारियों के लिए नहीं है। पहले आप लोग ठीक हो जाइए, फिर भिखारियों की मदद कीजिए। हम भिखारियों की मदद कर सकते हैं। उसके लिए अगर कहा गया कि थोड़े से पैसे दे दीजिए तो आप लोग इतने क्यों नाराज़ हो रहे हैं? मैं तो, आप जानते ही हैं पैसे को छूती भी नहीं। मेरे को मालूम ही नहीं है। लेकिन एक कार्य निकाला है, उसके लिए अगर कहा गया कि १०८ के बजाय ५०० दे दीजिए तो आप सारे लीडरों पर बिगड़ गए। सब पर बिगड़ गए और आफत मचा दी। माँ ये आपको किसने सलाह दी? अरे मुझे मशवरा देने वाला अभी पैदा ही नहीं हुआ। मैं तो अपने ही दिमाग से चलती हूँ। ये समझ लेना चाहिए। ऊपर से मैं भोली भाली लगती हूँ लेकिन अन्दर से मैं बहुत चन्ट हूँ। इसलिए मुझे बेवकूफ बनाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए। अगर आप लोगों से ज़रा सा भी नहीं होता है, सहजयोग के लिए देना, सालों बीत गए, हजारों लोगों को ठीक किया। इतने तो आप लोगों को बख्शीश में पैसे दिए, क्या-क्या किया। सब कुछ किया। आप जानते हैं। पर इतनी सी चीज़ के लिए लोगों की नज़र बदल गई। मुझे बड़ा दुःख हुआ इस बात पर। पहले भी ऐसे



ही होते रहा है। कितनी श्रद्धा है। अब बम्बई में इस बार सबने कहा कि माँ आप यहीं पूजा कर लो, तो मैंने कहा भई पिछली बार का अनुभव बड़ा खराब रहा, जो पूजा हुई उसमें से एक चौथाई लोगों ने खाने के पैसे दिए, बाकी सब मैंने भरा। पूजा मेरी की, खाने के पैसे भी मैंने दिए, बम्बई के लोग तो खास हैं। हमारे महाराष्ट्र के ऐसे कंजूस लोग हैं, वो ब्राह्मणों को देंगे, सिद्धि विनायक को देंगे, पर यहां मुफ्त में खाने को आ गए। एक चौथाई लोगों ने खाने को दिया, एक तिहाई ने पूजा का दिया। ग्यारह (११) रुपये और सहजयोग में आ गए। इससे अच्छा कटोरा लेकर कहीं मस्जिद के सामने बैठ जाएं, वह ज्यादा अच्छा है। वहीं कुछ अल्लाह उनका भला करे तो करे। ऐसे-ऐसे लोग सहजयोग में हैं और इसलिए मुझे कहना है कि आपसे मुझे किसी प्रकार का दान या पैसे की आज तक ज़रूरत नहीं पड़ी लेकिन मैंने कहा, ज़रा सोचा कि देखें, परख कर लें, उस परखने में मैं हैरान हो गई और कोई भी ऐसा गरीब नहीं है इसमें, जो ५०० भी नहीं दे सकता। फिर ये कहा गया, जो नहीं दे सकता नहीं दे, तो फोन पर फोन आ रहे हैं कि साहब मेरा नाम काट दीजिए। मैं नहीं दे सकती क्योंकि मेरे पति कमा रहे हैं। कितना कमाते हैं? सात हज़ार (७०००) कमाते हैं पर मैं नहीं दे सकती। मेरे पति दे देंगे। पर अपनी तरफ से मैं नहीं दे सकती जरा कुछ सेल (Sale) निकाल दीजिए, वो होता है ना (marketing). कुछ बचत हो जाए तो अच्छा है। किस किस को माफ़ करे। अरे भई कितना पैसा आने वाला है, उससे क्या हमारी (NGO) गैर सरकारी धर्मार्थ संस्था चलने वाली है? कुछ भी नहीं। पर आप लोगों की परीक्षा हो गई। आप लोग कितने गहरे पानी में हैं?

पैसे के अन्दर से पहले चित्त निकालना हिन्दुस्तान के आदमी के लिए बहुत जरूरी है, अगर वो सहजयोग में है, नहीं तो आजकल जेल भरो आन्दोलन चला ही हुआ है। पैसों में किसलिए इतना चित्त है? आपकी लक्ष्मी जी हमने जागृत कर दी। जितना आप दोगे, उतना ही आपको मिलेगा। देना इतने आनन्द की चीज़ है जिसकी कोई हद नहीं। आप लोग मुझे कुछ देते हैं तो मैं तो सिर्फ इसलिए लेती हूँ कि आप लोग खुश होते हैं। मुझे किसी चीज़ की ज़रूरत नहीं। मेरे घर में कोई जगह नहीं है। मेरे घर कुछ रखने की जगह नहीं है। मैं कुछ नहीं कर सकती। पर आप मुझे देते हैं प्यार से और आप उससे खुश होते हैं। लड़ाई-झगड़ा करके मैं हार गई कि मुझे आप साड़ी मत दो,

मुझे कुछ नहीं चाहिए, मुझे ज़ेवर नहीं दो। मैंने यहा तक कह दिया, मैं सब ज़ेवर बेचने वाली हूँ। उसी से सारे काम हो जाएंगे। तो कहने लगे माँ आपको जो करना है करो, पर हम तो देंगे ही। ये आप की खुशी के लिए हम लेते हैं। हमें क्या लेना और क्या देना? कुछ लिया ही नहीं तो देना क्या? लेकिन ये एक चीज़ हमारे अन्दर हिन्दुस्तानियों को समझनी चाहिए। हमने तो ऐसे ऐसे लोग देखे हैं कि आपको आश्चर्य होगा सिर्फ स्वतन्त्रता कमाने के लिए हमारे ही पिताजी के घर से सारी ज़मीन जायदाद सब बेच दिया। माँ ने हमारे सारे ज़ेवर बेच दिए, सब जेल में गए। मुझे तो बिजली के झटके (Electric Shock) लगाए गए और बर्फ पर लिटाया। मुझे कुछ नहीं होता था। सब मज़ाक था, लेकिन सब तरह की चीज़ें लोगों ने सहन की। दो-दो, तीन-तीन साल लोग जेल में रहे, और अब जेल में जा रहे हैं, इसमें कोई शक नहीं है। लेकिन इस वजह से कि पैसे खाए हैं। वो कहेंगे हम भी जेल में गए। जिन लोगों ने सहजयोग में बहुत बदतमीज़ी की है उनका हम छुटकारा करने वाले हैं, पक्की बात है। खबरदार किसी लीडर के खिलाफ किसी ने भी अगर आवाज़ उठाई तो उसकी हम सहजयोग से छुट्टी कर देंगे। पूरी तरह से जान लें, इसमें शक नहीं, क्योंकि हमें तोड़ना नहीं है। आपका स्वार्थ है, आपका मतलब है, आपको और कोई धन्धा नहीं है। तो पुलिस में भर्ती हो जाओ, (सी. आई. डी.) जासूस बन जाओ। कुछ भी करो। सहज में क्यों आप आए। सहज के लायक ही नहीं हैं आप। आये क्यों?

आज के दिन ये सारी बातें करने की मैंने बड़ी धृष्टता की और मैं जब सो गई थी तभी मेरे मन में ये ख्याल आया कि आज क्या कहा जाएगा। ७४ साल की उम्र का बूढ़ा क्या कहे। सो बुढ़े लोगों का एक ही काम होता है कि अपने बच्चों को नसीहत दें। उनको भी कहें कि जिन्दगी क्या है और आप किसलिए सहज में हैं। सहज में आप अपना सर्वनाश करने के लिए नहीं आए क्योंकि सहज की अति सांकरी गली कही जाएगी। इस तरह की है। अगर आपको सहज में आना है तो ये पता रखना चाहिए कि आपको इस सांकरी गली से चलना है जिसमें एक तरफ तो पहाड़ हैं एक तरफ खाई है। सो इसमें चढ़ने के लिए अगर आप के अन्दर वो मन का बल, वो शक्ति, वो पाक्विय, शुद्ध इच्छा नहीं है, तो होगा नहीं, आप आधे-अधूरे ही बैठ जाएंगे। ये पहाड़ी पर, जो आपने देखा है, गधे पर बैठ कर लोग चढ़ते हैं। वो गधे से पूछा भई तुम कैसे



गधे हो गए? तो उसने कहा कि हम भी आप ही लोगों जैसे थे, लेकिन आधे-अधूरे रह गए तो भगवान ने हमको गधा बना दिया कि कम से कम गधे के रूप में ऊपर पहुंच जाओ। ये सब कथायें आपने सुनी हैं, पढ़ी हैं। हमारे देश में तो इसका भंडार है। इसके वांगमय का भंडार है। इतनी कथाएं हो गईं, वे ज्यादातर हमारे उपदेश के लिए हैं, समझाने के लिए हैं कि गलत रास्ते पर चलने से क्या होता है। दुनिया भर की कथाएं हो गई हैं और उसमें से जो कथा हमें कुछ न कुछ सबक देती है वही कथा असली है। सो बार-बार मुझे लग रहा है कि आज के दिन मुझे कुछ अच्छा कहना चाहिए था लेकिन ये बात मेरे सामने इतने जोरों में खड़ी हो गई, इस शिव पूजा में, कि मैंने सोचा अगर मैं नहीं कहूंगी तो कैसे होगा और शिवजी की पूजा में आप कह भी नहीं सकते क्योंकि शिवजी तो सिर्फ क्षमा ही करते हैं। पर वो भी किसी हद तक और जब वो बिगड़ते हैं तो आप जानते हैं, वो क्या करते हैं। उनसे मुझे सबसे ज्यादा डर लगता है क्योंकि ये अगर थोड़ा बिगड़ गए तो वो आपको ठिकाने लगा देंगे।

सहजयोग का ज्ञान सारा आपको एक तरह से मुफ्त ही मिला है क्योंकि पूर्व जन्म बहुत बड़ा था। पूर्वजन्म की आपके अन्दर जो सम्पत्ति है उसके बूते पर आपने ये पाया। लेकिन सहज में आकर, सब पाकर, सम्पत्ति पाकर और आप अगर बेकार ही जाने वाले हैं तो बेहतर है इसको छोड़ दो और हमें भी बख्शो। सोच-सोचकर आज कहा, वैसे मैं सोचती कम हूँ, निर्विचार ही मैं हूँ लेकिन तो भी, मुझे चिन्ता इसलिए है कि मैंने आपको अपना बेटा माना, आपको अपनी बेटी माना, तो आपके जो दोष हैं उसके कारण जब आप मिटते जाएंगे, मुझसे देखा नहीं जाएगा। मुझे बहुत कष्ट होगा। सहजयोग में सब है आनन्द, शान्ति। आपके प्रश्न चुटकी बजाते ही ऐसे ठीक हो जाते हैं, आप लोग जानते हैं, आपको अनुभव है। मुझे कोई खास बताने की जरूरत नहीं है।

परमात्मा आपको धन्य करें।